भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVIII अंक–4 28 फरवरी, 2023

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः।।

हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिये यत्न करता है और उन यत्न करने वाले योगियों में भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्व से अर्थात् यर्थारूप से जानता है। **श्रीमद्भगवद्गीता 7/3**

बधाई

कुलसचिव सचिवालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/AREG/2023/124790 दिनांक 20/02/2023 के अनुसार R&PR (संशोधन) नियम, 2022 के अंतर्गत विभागीय पदोन्नति समिति (DPC) ने निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को दिनांक 20 फरवरी, 2023 से पदोन्नत किया गया हैः–

निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को उनके वर्तमान पद सहायक कुलसचिव से उप कुलसचिव (लेवल–12) में पदोन्नत किया गया है।

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड सं.)
1.	ऐलन वी. सिनाटे (26923)

निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को उनके वर्तमान पद उप तकनीकी अधिकारी से तकनीकी अधिकारी (लेवल–10) में पदोन्नत किया गया है।

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड सं.)
1.	आनंद कुमार गौतम (26308)
2.	मनजीत सिंह (26296)

निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को उनके वर्तमान पद कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी से उप तकनीकी अधिकारी (लेवल–08) में पदोन्नत किया गया है।

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड सं.)
1.	नितिन चौरसिया (26649)
2.	मनोज कुमार नीलम (26650)
3.	राजेंद्र खट्टर (26193)
4.	दीपक प्रियादर्शी (26652)
5.	मोहन किशोर कौशिक (26654)
6.	सुभाष चंद (26659)
7.	तुलसी राम (26662)
8.	ऊषा देवी एन. (26666)
9.	नैना राम गहलोत (26668)
10.	राजीव कुमार शर्मा (26683)
11.	मनोरंजन कुंडू (26684)
12.	डॉ संजय कुमार गुप्ता (26685)
13.	कौशिक पहारी (26695)
14.	सुरेंद्र कुमार शर्मा (26224)
15.	इंद्रमणि (26734)
16.	वीरेंद्र कुमार शर्मा (25719)
17.	शिव कुमार उपाध्याय (26800)
18.	रचना जोशी (26804)
19.	रितू (26805)
20.	ऋत्विक पहाडी (26811)
21.	आलोक प्रताप यादव (26812)
22.	सुमित कपूर (26813)
23.	दिनेश कुमार (26830)
24.	नरेंद्र कुमार (26846)
25.	भूपेंद्र सिंह (26848)
26.	विजय कुमार (26855)
27.	बी. अंजनाया वाराप्रसाद (26858)
28.	नरूगोपाल कुल्ली (26863)
29.	प्रीतम योगी (26874)
30.	हरप्रीत सिंह (26891)
31.	सतपाल सिंह (26903)
32.	विनय शर्मा (26901)
33.	संदीप कश्यप (26905)
34.	वीरन्ना दरावथ (26924)
35.	सुनील कुमार (26688)
36.	गौरव कुमार (27006)
37.	जितेंद्र प्रसाद (27043)
38.	सोमवीर (27005)
39.	सुजीथ. एस (27012)

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/AREG/2023/125611 दिनांक 22/02/2023 के अनुसार R&PR (संशोधन) नियम, 2022 के अंतर्गत विभागीय पदोन्नति समिति (DPC) ने निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को दिनांक 22 फरवरी, 2023 से पदोन्नत किया गया है:–

निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को उनके वर्तमान पद लेखा व लेखापरीक्षा अधिकारी से सहायक कुलसचिव (लेवल–10) में पदोन्नत किया गया है।

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड सं.)
1.	विनेश यादव (26311)
2.	राज रानी (26312)

निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को उनके वर्तमान पद सहायक प्रशासनिक अधिकारी से उप प्रशासनिक अधिकारी (लेवल–08) में पदोन्नत किया गया है।

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड सं.)
1.	विनोद कुमार (26276)
2.	विनोद कुमार (26266)
3.	किरण डोगरा (26255)
4.	भूपेंद्र सिंह नेगी (26256)
5.	सुभाष चंद (26277)
6.	राजेश कुमारी (25482)
7.	राजेश सेकवाल (26575)
8.	राज कुमार (25492)
9.	बीना मंशारामानी (25489)
10.	मंजू शर्मा (25491)
11.	मीना खन्ना (26348)
12.	मुरली हिंदवानी (25494)
13.	विक्रम सिंह (25495)
14.	सीमा रानी सक्सेना (25496)
15.	सीमा जेटली (25497)

निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को उनके वर्तमान पद कनिष्ठ लेखा एवं लेखापरीक्षा अधिकारी से लेखा एवं लेखापरीक्षा अधिकारी (लेवल–08) में पदोन्नत किया गया है।

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड सं.)
1.	प्रवीण दशरथ पौणिकर (26807)
2.	डी.रानी (26782)
3.	रजनीश अग्रवाल (26904)

निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को उनके वर्तमान पद सहायक खेल अधिकारी से उप खेल अधिकारी (लेवल–08) में पदोन्नत किया गया है।

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड सं.)
1.	रेखा सती देओली (26937)

हिन्दी कक्ष की ओर से सभी स्टाफ सदस्यों को उनकी पदोन्नति के लिए बधाई एवं शुभकामनायें। आशा है हम सभी सहयोगी भावना से संस्थान के समग्र विकास के लिये प्रसन्नता से योगदान करेंगे तथा संस्थान को नई ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 28 फरवरी, 2023 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

श्रीमती मीना कुमारी (25808), उप प्रशासनिक अधिकारी, यांत्रिक इंजीनियरी विभाग

श्रीमती मीना कुमारी ने 30 जनवरी, 1991 को संस्थान में आशुलिपिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप किया गया तथा 1 फरवरी, 2003 को इसी योजना के अन्तर्गत कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 30 जनवरी, 2011 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। 8 दिसम्बर, 2022 को विभागीय पदोन्नति समिति के अन्तर्गत अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया तथा 22.12.2022 को आर. ऐन्ड पी.आर.एस. के अन्तर्गत उप प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पदनामित किया गया।

सौम्य स्वभाव की श्रीमती मीना कुमारी एक योग्य एवं मेहनती उप प्रशासनिक अधिकारी रही हैं।

श्री नरेश कुमार शर्मा (70085), कनिष्ठ मैकेनिक, निर्माण संगठन

श्री नरेश कुमार शर्मा ने 31 मार्च, 1989 को संस्थान में 750-940/–रु. के वेतनमान में हेल्पर/बेलदार के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अप्रैल, 1997 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत 3050-4590/–रु. के वेतनमान में पदोन्नत किया गया। 1 सितम्बर, 2008 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत 5200-20200/–रु. के साथ ग्रेड वेतन 2000/–रु. में उन्नयन दिया गया। 4 अप्रैल, 2016 को आपको ग्रुप 'डी' से ग्रुप 'सी' में कनिष्ठ मैकेनिक के रूप में नियोजित किया गया। 1 सितम्बर, 2018 को आपको एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत 5200-20200/–रु. के साथ ग्रेड वेतन 2400/–रु. में उन्नयन दिया गया।

सौम्य स्वभाव के श्री नरेश कुमार शर्मा एक योग्य एवं मेहनती कनिष्ठ मैकेनिक रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

आजादी का अमृत महोत्सव

वैदिक शिक्षा का विराट वटवृक्ष

आर्य समाज के रूप में महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारत में वह बीज आरोपित किया, जिसके वृक्ष की शाखाएं आज देशभर में फैली है। उनकी शिक्षाओं से प्रेरित महात्मा हंसराज ने दयानंद एंग्लो वैदिक शिक्षण समिति की स्थापना की, जो आज 900 विद्यालयों, 75 महाविद्यालयों और एक विश्वविद्यालय के साथ ज्ञान का प्रकाश फैला रही है। यह डीएवी का ही पानी था, जिसने अंग्रेजों से शिक्षा के क्षेत्र में टक्कर ली। लाहौर से कोलकाता तक उच्च शिक्षा में हिंदी की अलख जगा दी और जगाए ऐसे शूरवीर, जिन्होंने दांत खट्टे किए ब्रिटिश हुकूमत के महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जन्म जयंती पर प्रो. संजीव कुमार शर्मा का आलेख....

आधुनिक भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आकाश के दैदीप्यमान नक्षत्रों में कदाचित सर्वाधिक प्रभावशाली और साहसी महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती रहे। अपने वैदुष्य, तार्किकता, निर्भीकता, वक्तृत्व कौशल, सांगठनिकता, ऊर्जा और वैविध्य से अद्यतन चमत्कृत करने वाली प्रतिभा के धनी महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती के जन्म के 200 वर्ष होने पर उनके अद्‌भुत व्यक्तित्व के बहुआयामी क्रियाक्षेत्र तथा प्रभावकारिता का स्मरण स्वाधीनता के अमृतकाल में स्वाभाविक है। भारतीय राजनीतिक स्वातंत्र्य के वैचारिक पक्षधर भी इस सत्य तथा तथ्य से सहमत हैं कि सहस्रों वर्षों की पराधीनता, दमन, अत्याचार और बलपूर्वक मतांतरण की पीड़ा का परिहार करने के प्रयत्न कभी भी मात्र राजनीतिक नहीं थे। भारत की सामाजिक सांस्कृतिक चेतना अपनी व्यथा से निरंतर विचलित और आकुलित तो थी, मगर साथ ही समाज–सुधार, धर्मचिंतन, पारंपरिक ज्ञान और व्यक्ति निर्माण की आयोजना में भी निरंतर संलग्न थी। इसी पृष्ठभूमि में भारत के स्वत्व तथा स्वधर्म की सामूहिक प्रस्तुति अनेकानेक संतों, संन्यासियों, विद्वानों, कवियों, साहित्यकारों, साधुओं, यायाधरों तथा गुरुओं के विचारों में दृश्यमान हो रही थी। इसी क्रम में मुगल क्रूरता और अंग्रेज आक्रांताओं को दुष्टता के बलशाली होने का वैचारिक प्रतिरोध जिन सामाजिक आंदोलनों ने प्रकट और प्रकृष्ट रूप में किया, उनमें 'आर्य समाज' का अप्रतिम योगदान है।

दासताबोध का उन्मूलन

भारतीय सांस्कृतिक वैभव के प्रबल पक्षधर और वैदिक परंपरा की वैज्ञानिकता के प्रतिपादक स्वामी दयानंद ने भारतीय समाज में परतंत्रता के परिणामस्वरूप अतिव्याप्त दयनीयता, आत्मविस्मृति, आत्महीनता और जड़ रूढ़िवाद की विकृतियों को स्वयं निकटतापूर्वक देखा था। दासताबोध, आडंबर तथा कर्मकांड में संलिप्त समाज के मूल उत्स भय से उन्होंने स्वयं साक्षात्कार किया था। अतएव आत्मावलंबन, आत्मगौरव, आत्मनिर्भरता और आत्माभिमान का पाठ पढ़ाने के लिए उन्होंने भारतीय जनमानस को संसार की शिरोमणि सभ्यता, धर्म और संस्कृति की सर्वोत्कृष्टता से परिचित कराना प्रारंभ किया। सर्वत्र आर्य–राज्य व धर्म की विद्यमानता तथा ज्ञान–विज्ञान में अग्रगण्यता भारत का वैशिष्ट्य रहा था। स्वामी दयानंद ने भारतीयों को इस तथ्य से अवगत कराने का प्रण लिया। देश के पतन मार्ग पर प्रवृत्त होने के कारणों की विशद समीक्षा करते हुए स्वामी दयानंद ने आलस्य, प्रमाद, द्वेष, विषयासक्ति, पुरुषार्थहीनता तथा विद्या पराङ्‌मुखता को चिह्नित किया।

भारतीय पुनर्जागरण की नींव

मूर्तिपूजा के कारण उत्पन्न रूढ़ियों पर प्रहार करते हुए भी स्वामी दयानंद ने मूर्तिभंजन की कठोर आलोचना की। विदेशी पाश्चात्य आक्रांताओं के शासन का विरोध किया। वैदिक मंत्रों की समसामयिक करते हुए पराधीनता की निंदा की और स्वाधीनता व राष्ट्रीयता के प्रति जनमानस को जाग्रत किया। 'सत्यार्थ प्रकाश' में उन्होंने स्वदेशी राज्य की बात तो 'आर्याभिविनय' में स्वराज्य पर चर्चा की। 'ऋग्वेदादिभाष्य' में भी स्वराज्य शब्द ने अनेकशः प्रयोग किया। 'वेदों की ओर लौटो' नारे के माध्यम से स्वामी दयानंद में भारतीय पुनर्जागरण की नींव रखी। उनके गुरु दंडी स्वामी विरजानंद के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध होने के प्रमाण भी उपलब्ध है। उनका स्वाधीनता संग्राम के सैनिकों तथा जनमानस को अंग्रेजी आततायी शासन के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित करने वाले संन्यासियों में प्रमुख स्थान था। अपने गुरु के अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने तथा राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की और अपने प्राणों की आहुति दी।

राष्ट्रीय चेतना की ओजस्वी शक्ति

वस्तुतः इस कालखंड में अंधविश्वास और पाखंड के निर्भीकतापूर्वक खंडन, समाज सुधार, विद्या प्रसार, धर्म प्रचार, राष्ट्रीयता की भावना का संचार तथा स्वदेशी को प्रोत्साहन में संलग्न यह एकमात्र व्यापक जन आंदोलन था। संविधान सभा के सदस्य तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे पट्टाभिसीतारमैया ने राष्ट्रीय आंदोलन में आर्य समाज के महान देशभक्तिपूर्ण तथा उत्साह संपन्न, समन्वयकारी परंतु उग्रस्वरूप को परंपरा से प्राप्त सर्वोत्कृष्ट तत्वों का समकालीन परिस्थितियों में सुंदर समन्वय बताकर उसके योगदान की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी साहित्यकार रोम्या रोलां ने स्वामी दयानंद को राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण तथा पुनर्जन्म के भारतीय आंदोलन की सबसे अधिक ओजस्वी शक्ति कहा है। इसी कारण लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल, भाई परमानंद, राजा महेंद्र प्रताप जैसे अनेकानेक क्रांतिकारी स्वतंत्र्य सेनानी आर्य समाज को वैचारिक गतिशीलता और व्यावहारिक सक्रियता से अत्यंत प्रभावित हुए।

सम्मिलित होते हुए स्वामी श्रद्धानंद ने मोपला अत्याचारों पर राजनीतिक मंचों पर विद्यमान उदासीनता और एकपक्षीयता का प्रबल प्रतिकार किया। परिणामस्वरूप उनकी निर्मम हत्या कर दी गई। अहिंसक आर्य समाजी नेता द्वारा स्वाधीनता प्राप्ति हेतु प्राणोत्सर्ग तथा सांप्रदायिक उन्माद की अमानवीय पराकाष्ठा के सार्वजनिक प्रस्फुटन की यह प्रथम घटना थी। वस्तुतः अछूतोद्धार स्वराज्य, स्वदेशी स्वभाषा और स्वातंत्र्य के राष्ट्रीय आंदोलन के प्रस्थान बिंदुओं को सर्वप्रथम स्वामी दयानंद ने ही चिह्नांकित किया था। उनकी रचना 'सत्यार्थ प्रकाश' भारतीय राष्ट्रीय स्वातंत्र्य आंदोलन की वह यज्ञ ज्वाला थी जिसने सहस्त्रों भारतीयों के मानस में पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा प्रवाहित की।

शैक्षिक आंदोलन का सूत्रपात

स्वामी दयानंद के वैदिक, आध्यात्मिक समाज सुधारक, स्वातंत्र्य सेवी आदि बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व का सर्वाधिक प्रभावोत्पादक स्वरूप उनके विचारों को व्यापक तथा शाश्वत बनाए रखने के उद्देश्य से की गई शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना को माना जा सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेज सरकार तथा ईसाई मिशनरियों द्वारा भारतीय शिक्षा पद्धति और व्यवस्था को समूल विनष्ट करने के सुनियोजित प्रयत्न किए गए। गुरुकुलों तथा विद्यालयों की सुदृढ़ परंपरा को विधिवत ध्वस्त किए जाने के दुष्परिणाम सामाजिक तथा सांस्कृतिक पराभव में स्पष्टतः परिलक्षित हो रहे थे। भारतीय साहित्य कला, ज्ञान, विज्ञान, भाषा, परंपरा, संस्कृति नैतिकता और धर्म से पूर्णतया अपरिचित विद्यार्थी वर्ग का निर्माण किया जा रहा था। इस परिस्थिति में सर्वप्रथम स्वामी दयानंद के अनुयायियों ने अपनी सामर्थ्य से परे जाते हुए संयुक्त सामाजिक प्रयासों से दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना की। कुछेक वर्ष के अंतराल पर ही दयानंद एंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना के विचार ने बल

पकड़ा और व्यापक सामाजिक तथा आर्थिक सहमति व साहाय्य भी प्राप्त होने लगा। रोचक तथ्य यह है कि हिंदी और संस्कृत शिक्षा की अनिवार्यता को रेखांकित करते हुए डी.ए.वी. कालेज के स्थापना उद्देश्यों में अंग्रेजी शिक्षा को भी आवश्यक बताया गया ताकि किसी भी प्रकार की एंकागी की व्याधियों से शिक्षार्थी का अहित न हो। महर्षि दयानंद की वैचारिक थाती को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से लाहौर में आठ नवंबर, 1883 को सार्वजनिक सभा द्वारा डी.ए.वी कालेज का प्रस्ताव स्वीकृत किया जाना आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था के इतिवृत्त की एक अतीव महत्वपूर्ण घटना है। इसके घोषित उद्देश्य आज तक सभी महत्वपूर्ण शिक्षा नीतियों को आधारभूमि प्रदान करते हैं। पंजाब के होशियारपुर जिले के लाला हंसराज ने वर्ष 1885 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के उपरांत सरकारी सेवा में अच्छी आजीविका प्राप्त करने के स्थान पर व्यापक समाज सेवा का दृढ़ निश्चय किया। अपने व्यक्तिगत उज्वल भविष्य और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन की संभावनाओं को तिलांजलि देकर उन्होंने स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रदर्शित राष्ट्र–निर्माण पथ का अनुसरण करना श्रेयस्कर समझा और प्रथम डी.ए.वी. कलेज का नेतृत्व करना स्वीकार किया। इस प्रकार स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्यसमाज के रूप में वैचारिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा पारंपरिक आधुनिकता का जो बीज बोया उसका ही पुण्य फल देश भर में संवितरित हुआ। आर्य समाज के अनुयायियों ने 31 जनवरी, 1886 को दयानंद एंग्लो वैदिक कालेज ट्रस्ट एंड मैनेजिंग सोसायटी की स्थापना की जिसके परिणामस्वरूप एक जून, 1886 को विधिवत् प्रथम डी.ए.वी. कालेज, लाहौर प्रारंभ हो गया।

प्रसारित होता गया विचार

समाज की स्वतः स्फूर्त प्रेरणा और सहयोग राशि से संबल प्राप्त करते हुए डी.ए.वी. शिक्षण संस्था का विचार निरंतर प्रसारित होता गया। देश भर डी.ए.वी. स्कूल कालेज खोले जाने लगे। लाहौर से कोलकाता तक दयानंद एंग्लो वैदिक शिक्षण संस्थाएं संस्कृत, हिंदी तथा अंग्रेजी के शिक्षण के साथ–साथ भारतीय संस्कृति के प्रवेश द्वार का स्वरूप प्राप्त करने लगी। साथ ही स्वदेशी, स्वराज्य और स्वतंत्रता के विचार को प्रवाहित करने का सबल मंच बनने लगी। आर्य समाज ने अनेक पालीटेक्निक, आयुर्वेदिक कालेज, मेडिकल कालेज, ललित कला विद्यालय, कन्या व्यायाम विद्यालय, महिला शिल्प कला केंद्र, कृषि विद्यालय, हस्तकला प्रशिक्षण केंद्र, औद्योगिक शिक्षा संस्थान, इंडस्ट्रियल स्कूल आदि की भी स्थापना की जिससे छात्र–छात्राओं के कला, शिल्प और उद्योग का समुचित प्रशिक्षण प्राप्त हो सके तथा आत्मावलंबन के द्वार भी अनावृत हों। इस प्रकार महात्मा हंसराज ने स्वामी दयानंद की शिक्षाओं से प्रभावित होकर जो ज्योति प्रकाशित की उसका प्रकाश यत्र–तत्र सर्वत्र फैलने लगा। आज डी.ए.वी शिक्षण संस्थाओं का प्रसार विदेश तक हो गया है। फिजी और मारीशस में भी ये संस्थाएं स्थापित है। सूरीनाम, सिंगापुर, ट्रिनीडाड, दक्षिण अफ्रीका, तंजानिया, केन्या, गुयाना, युगांडा, मोजांबिक, म्यांमार ब्रिटेन, अमेरिका आदि में आर्य समाज द्वारा शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की गई है। ये सभी शिक्षण–संस्थाए भारतीयता और आधुनिकता के सुंदर समन्वय का कार्य करती है। भारतीय मूल के प्रवासी भारतीयों के सांस्कृतिक अनुराग तथा धार्मिक आस्था को सुदृढ़ करने के साथ–साथ हिंदी भाषा और वैदिक मूल तत्वों से संयुक्त रखने में ये संस्थाएं संलग्न हैं।

आंदोलन का अस्त्र बना स्वदेशी

वस्तुतः भारतीय शिक्षा के अंग्रेजीकरण के तीव्र आघात को निर्भय संबोधित करने तथा निरंतर (विशेषकर उच्च शिक्षा में) हिंदी की अलख जगाने का गुरुतर दायित्व डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं ने ही अपने सिर ले लिया। इन संस्थाओं से निकले तेजस्वी युवाओं ने अत्याचारी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता की चिंगारी को न केवल जलाए रखा अपितु देश भर में फैलाने का कार्य भी भलीभांति किया। स्वामी दयानंद ने अनेक वर्ष पूर्व स्वदेशी का जो विचार आर्य समाज को दिया उसे अनेकानेक भारतीयों ने अपनाया। स्वामी दयानंद के लिए स्वदेशी केवल भारत में उत्पादित और निर्मित वस्तुओं के उपयोग तक सीमित विचार नहीं था अपितु, वे भारत के सम्पूर्ण सांस्कृतिक स्वदेशीकरण के प्रतिपादक थे। कालांतर में महात्मा गांधी ने इस स्वदेशी की अवधारणा को राष्ट्रीय आंदोलन का एक महत्वपूर्ण अस्त्र बनाया।

क्रांतिकारियों पर व्यापक प्रभाव

स्वामी दयानंद के शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा यूरोप में विदेशी क्रांतिकारी संगठनों से संपर्क कर भारतीय स्वाधीनता के लिए वृहत सांगठनिक प्रयास करने लगे। पंजाब में लाला हरदयाल के साथ प्रमुख आर्य–समाजी भाई परमानंद, सरदार अजीत सिंह, भाई बालमुकुंद तथा पंडित गेंदालाल दीक्षित क्रांतिकारी आंदोलन के अग्रणी बने। डी.ए.वी. के प्रमुख प्रवर्तकों में से एक लाला लाजपत राय मूलतः आर्य समाजी नेता ही थे। सरदार भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह केशधारी सिख होते हुए भी महात्मा हंसराज के साथी आर्य समाजी थे। प्रसिद्ध लेखक यशपाल ने पंजाब के प्रारंभिक क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार तथा कांग्रेस के प्रभाव को फैलने के लिए आर्य समाजी वातावरण को ही उत्तरदायी माना है। संविधान सभा के सदस्य रहे अलगूराय शास्त्री ने आर्य समाजी गुरुकुलों को स्थापना में विशिष्ट योगदान दिया। सरदार भगत सिंह के आर्य समाज से सक्रिय संपर्क के विस्तृत विवरण उपलब्ध है। शहीद सुखदेव निष्णात आर्य समाजी थे। भगवतीचरण वर्मा, दुर्गा भाभी, सुशीला देवी, रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, विष्णु शरण दुबलिश, हंसराज वायरलेस आदि अनेक स्वाधीनता सेनानी आर्य समाज की शिक्षाओं से प्रभावित थे। लाला खुशहाल चंद (जो बाद में संन्यास में प्रविष्ट होकर महात्मा आनंद स्वामी बन गए) तथा महाशय कृष्ण ने भी स्वाधीनता की ज्वाला को विस्तार देने में भरपूर श्रम किया।

इस प्रकार आधुनिक भारत के अनूठे महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने जहां एक और वेदों को प्रामाणिकता का प्रतिपादन किया वहीं दूसरी ओर आर्य समाज की सामाजिक सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की। ऊँच–नीच, छुआछुत के विरुद्ध घोषित किया तो अछूतोद्धार का आंदोलन भी चलाया। मूर्तिपूजा में व्याप्त हो गए आडंबर का विरोध किया तो पाखंड का सार्वजनिक खंडन भी किया। राष्ट्रीय गौरव का बोध कराया तो राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयत्न भी किए। स्वदेशी का विचार प्रणयन किया तो स्वराज्य के लिए प्रेरित भी किया। तार्किक शास्त्रार्थ किए तो विशद वैचारिक लेखन भी किया। आर्य संस्कृति का उद्घोष किया तो संस्कृत भाषा को आर्यावर्त में फैलाने का उद्यम भी किया। समग्र भारतीय पुरुषार्थ का आह्वान किया तो निर्भीक सामर्थ्यशाली भारतीयता का बोध भी कराया। पराधीनता की तीव्र भर्त्सना की तो विदेशी सता से मुक्ति को राह भी दिखाई। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया तो ज्ञान–विज्ञान के विकास की आवश्यकता को भी रेखांकित किया। अंधविश्वास का निषेध किया तो शिक्षा की ज्योति को व्यापक विस्तार भी दिया। भारतीय सांस्कृतिक मनीषा के समर्थतम में संवाहकों में श्रेष्ठतम महर्षि स्वामी सरस्वती की 200 वीं जयंती के अवसर पर उनकी पुण्य पावन स्मृति को कोटिशः प्रणाम।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक–12 फरवरी, 2023

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

ई–मेलः sagarprinters@gmail.com